International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2024; 1(4): 33-37
© 2024 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 19-10-2024
Accepted: 24-10-2024
Publish : 26-10-2024

डॉ. विश्वामित्र राय
अतिथि प्राध्यापकः, (शिक्षाशास्त्रविभागः),
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः,
उज्जयिनी, मध्यप्रदेशः, भारतम्

Correspondence:
डॉ. विश्वामित्र राय
अतिथि प्राध्यापकः, (शिक्षाशास्त्रविभागः),
महर्षिपाणिनिसंस्कृतवैदिकविश्वविद्यालयः,
उज्जयिनी, मध्यप्रदेशः, भारतम्

रामायण पर केन्द्रित हंस सन्देश काव्य मे मूल्यों का अध्ययन (राष्ट्रियशिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में)

डॉ. विश्वामित्र राय

सारांश –

अनन्त जगत में भारतवर्ष ही ऐसि भूमि है जो कि देवभूमि नाम से परिचित है, जिसमें व्यवहार किये जाने वाली भाषा देवभाषा संस्कृत नाम से सुविख्यात है । उसी भाषा में अनेकों ग्रन्थ विश्वप्रसिद्ध हुए परन्तु श्रीरामचन्द्रजी के द्वारा प्रदर्शित मार्ग रामायण सबसे बढकर है जहाँ मानवीय मूल्यों की प्राचुर्यता पाई जाती है । उनको आधार मानकर ही स्वामी श्री वेदान्तदेशिक प्रणीत हंस सन्देश काव्य मे हम मानवीय मूल्यों का अवलोकन करेंगे । तथा उनका हमारे नवीन राष्ट्रियशिक्षानीति में किस प्रकार छात्रों के हित मे उपयोगकारि होगा यह विषय शोधपत्र के माध्यम से वर्णित होगा ।

राष्ट्रियशिक्षानीति 2020 के कुछ अंश -

12. सीखने के लिए सर्वोच्चम वातावरण व छात्रों को सहयोग

12.1 प्रभावी ढंग से सीखने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें उपयुक्त पाठ्यक्रम आकर्षक शिक्षण निरंतर रचनात्मक मूल्यांकन और छात्रों का पर्याप्त सहयोग शामिल होता है। पाठ्यक्रम रोचक और प्रासंगिक होना चाहिए जिसे समय-समय पर अद्यतन करते रहना चाहिए जिससे ज्ञान की नवीन आवश्यकताओं व सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त किया जा सके। उच्चतर गुणवत्ता वाली शिक्षण विधा छात्रों तक पाठ्यक्रम सामग्री को सफलतापूर्वक ले जाने के लिए आवश्यक है। शिक्षण के इन तरीकों से छात्रों के सीखने के अनुभव निर्धारित होते हैं जो कि सीधे ही सीखने के प्रतिफलों पर प्रभाव डालते हैं। आकलन के तरीके वैज्ञानिक होने चाहिए जो कि सीखने में लगातार सुधार व ज्ञान के प्रयोग के परीक्षण के लिए बने होने चाहिए। अंत में कुछ ऐसी क्षमताऐ जो छात्रों की बेहतरी के लिए आवश्यक है जैसे - फिटनेस अच्छा स्वास्थ्य मनो सामाजिक कल्याण बेहतर नैतिक मूल्यों का आधार आदि का भी विकास गुणवत्तापूर्ण ढंग से सीखने के लिए महत्वपूर्ण है ।

अतः पाठ्यक्रम, अध्यापन, निरंतर मूल्यांकन और छात्रों की मदद गुणवत्तापूर्ण ढंग से सीखने के लिए आधारशिला है। इन आवश्यक बिन्दुओं को सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त बुनियादी ढाँचा, संसाधन (जैसे बेहतरीन पुस्तकालय कथा-कक्ष, प्रयोगशालाएं प्रौद्योगिकी, खेल/मनोरंजन के स्थान छात्रों के संवाद हेतु स्थान और भोजन के लिए स्थान) आदि प्रदान करने के साथ-साथ इन मामलों पर कई पहल करने की आवश्यकता होगी जिससे सीखने का वातावरण आकर्षक और सहायक बनाया जा सके और सभी छात्रों को सफल होने के लिए सक्षम बनाया जा सके ।

12.2 पहला उच्चतर शिक्षा के व्यापक ढाँचे में रचनात्मकता को सुनिश्चित करने के लिए संस्थानों और संकायों को पाठ्यक्रम शिक्षण विधि और आकलन आदि पर नवाचार करने की स्वायत्ता देनी होगी, जो कि सभी संस्थानों कार्यक्रम, सभी मुक्त दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल), ऑनलाइन और पारम्परिक कक्षा-कक्ष शिक्षण में समान रूप से सुनिश्चित किया जाएगा। छात्रों को एक बेहतर और आकर्षक शिक्षण अनुभव देने के लिए संस्थानों और प्रेरित संकायों द्वारा इसके अनुरूप पाठ्यक्रम और शिक्षण विधा को रचा जाएगा और प्रत्येक कार्यक्रम को उसके लड़यों तक पहुँचाने के लिए रचनात्मक आकलन का उपयोग किया जाएगा। उच्चतर शिक्षण संस्थानों द्वारा सभी मूल्यांकन प्रणालियां भी तय की जाएंगी, जिनमें अंतिम रूप से प्रमाणन भी शामिल है। नवाचार और तचीतापन ताने के लिए विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (सीबीसीएस) को संशोधित किया जाएगा। उच्चतर शिक्षण संस्थान एक मानदंड-आधारित ग्रेडिंग प्रणाली का निर्माण करेंगे, जो प्रत्येक कार्यक्रम के लिए सीखने के लक्ष्यों के आधार पर छात्र की उपलब्धि का आकलन करेगा, जिससे प्रणाली निष्पक्ष बनेगी और परिणाम अधिक तुलनीय होंगें।

उच्चतर शिक्षण संस्थान भी हाई-स्टेक परीक्षाओं से और अधिक सतत और व्यापक मूल्यांकन की ओर बढ़ेंगे ।

12.3 दुसरा, प्रत्येक संस्थान अपनी वृहद संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) में शैक्षणिक योजनाओं को पाठ्यक्रम सुधार से लेकर कक्षा-कक्ष के गुणवत्तापूर्ण आदान-प्रदान को एकीकृत करेगा। प्रत्येक संस्थान छात्रों के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध होगा, इसके लिए एक ऐसी आंतरिक प्रणाली बनाएगा जो कि विविध प्रकार के छात्र समूहों को शैक्षणिक और सामाजिक क्षेत्र में सहयोग करेगा। इसके लिए कक्षा के भीतर और बाहर औपचारिक अकादेमिक बातचीत को सुनिश्चित किया जायेगा। उदाहरण के लिए सभी उच्चतर शिक्षण संस्थानों में छात्रों द्वारा संकाय व अन्य विशेषज्ञों की मदद से विषय आधारित क्लब और गतिविधियों जैसे कि विज्ञान, गणित, कविता, भाषा, साहित्य, वाद-विवाद, संगीत, खेल आदि के लिए समर्पित क्लब व कार्यक्रम के आयोजन के लिए अवसर व वित्त की व्यवस्था होगी। समय के साथ - साथ जब इन गतिविधियों के लिए छात्रों की मांग व संकाय की दक्षता हासिल हो जाए तो इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल किया जा सकता है। संकाय में इस स्तर का प्रशिक्षण व क्षमता होनी चाहिए कि वे न केवल शिक्षक के रूप में अपितु संरक्षक व मार्गदर्शक के रूप में छात्रों से जुड़ सकें ।

12.4 तीसरा, सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों को उच्चतर शिक्षा तक सफलतापूर्वक पहुचने के लिए विशेष प्रोत्साहन और सहायता की आवश्यकता होती है। इसके लिए विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को उच्चतर गुणवत्ता वाले सहायता केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता होगी और इसे प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए उन्हें पर्याप्त धन और शैक्षणिक संसाधन दिए जाएंगे। सभी छात्रों के लिए व्यावसायिक अकादमिक और करियर परामर्श उपलब्ध होगा, साथ ही साथ उनके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए भी परामर्शदाता होंगे ।

12.5 चौथा, ओडीएल और ऑनलाइन शिक्षा, गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए एक प्राकृतिक मार्ग प्रदान करता है। इसकी पूरी क्षमता का लाभ लेने के लिए ओडीएल को विस्तार की दिशा में ठोस, साक्ष्य आधारित प्रयासों के माध्यम से नवीनीकृत किया जाएगा, साथ ही इसके लिए निर्धारित स्पष्ट मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाएगा। ओडीएल कार्यक्रम उच्चतम गुणवत्ता वाले इन क्लास कार्यक्रमों के बराबर होने का लक्ष्य रखेंगे। ओडीएल के प्रणालीगत विकास, विनियमन और मान्यता के लिए मानदंड, मानक, और दिशानिर्देश तैयार किए जाएंगे, और ओडीएल की गुणवत्ता के लिए एक रूपरेखा तैयार की जाएगी, जो कि सभी उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों के लिए अनुशंसित की जाएगी ।

12.6 अंत में सभी कार्यक्रमों, पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, विषयों में शिक्षण विधि, इन-क्लास, ऑनलाइन, ओडीएल और छात्रों को समर्थन जैसे सभी कार्यक्रमों का लक्ष्य होगा कि वे गुणवत्ता के वैश्विक मानकों को प्राप्त कर पाएँ ।

हंस संदेश काव्य -

हंस संदेश स्वामी वेदान्तदेशिक की अद्वितीय काव्य रचना है । यह कविता रामायण से साक्षात संबंधित है । जब हनुमान माता सीता की खोज के बाद लंका से लौटते हैं, तो श्री रामचन्द्र रावण से लड़ने की तैयारी से पहले सीता को आस्वस्थ करने के लिए हंस को अपने दूत के रूप में भेजते हैं। इस अवसर पर सबसे पहले हंस की स्तुति करना और उसके लिए प्रार्थना करना था बाद में उन्होंने सड़क की सुविधा के बारे में बताया और उन्हें लंका जाने के लिए प्रोत्साहित किया माल्यवन शिखर से लंका के लिए दो मार्ग हैं, पहला सह्याद्रि पर्वत के पश्चिममार्ग से है और दूसरा मद्रास प्रांत के पूर्वी तट से है । पश्चिमी सड़क पर लगातार बारिश होने के कारण से हंस को पूर्वी मार्ग लेने की सलाह दी गई थी । इस प्रकार, यह उल्लेख किया गया है कि जब कोई पूर्वी मार्ग से लंका की ओर बढ़ते हुए कर्नाटक और आंध्र प्रदेश पहुंचता है, तो उसे अंजनाद्री और वेंकटाद्री की चोटी दिखाई देगी । अंजनाद्री से दक्षिण की ओर जाकर सुवर्णमुखरी नदी के तट पर विश्राम करते हुए तुण्डीरमण्डल में घूमते हुए हंस को सत्यव्रत क्षेत्र और कांचीनगरी जाने का निर्देश दिया गया । इस अवसर पर कांचीनगरी के मध्य बहति वेगा नदी तथा उत्तरीतट के हस्तिशैलश्रृंग का भी उल्लेख किया गया है । तुण्डीरमण्डल के बाद हंस को चोल देश जाने का निर्देश दिया गया। चोल देश का वर्णन करते हुए कवि ने सेम वृक्षों के गुच्छों की, कावेरी नदी, सफेद पर्वत, नीले जंगल और चंद्र पुष्करिणी का उल्लेख किया है । चंद्र पुष्करिणी के तट पर श्रीरंगधाम की स्थिति का वर्णन किया गया है । चोल और पाण्य देशों के बीच एक भयानक वन क्षेत्र के बारे में वर्णित किया गया था जिसमें चोर और अन्य शामिल थे, और इसलिए यह आदेश दिया गया था कि जंगल को तुरंत पार किया जाना चाहिए । पाण्ड्य देश में पहुंचने पर भगवान विष्णु के निवास स्थान, वृषभाचल को नमन कर, आगे ताम्रपरी नदी दिखाई देगी यहाँ से वाएँ की ओर आगे बढते ही दक्षिण समुद्रतट मिलेगा इसका वर्णन किया गया है । इसमें समुद्र तट से लंका शहर के रास्ते में सुवेलशृंग का आगमन तत्पश्चात् हंस का लंका के लिए प्रस्थान का उल्लेख है। लंका में रावण के महल से सीधे मार्ग में अशोक उद्यान गमन और वहां शिशमपेड के नीचे सीता से मिलने की सलाह दी गई । इस प्रकार कवि ने हंस का सीता के साथ मिलन के बारे में सोचा, और कवि ने श्री रामचंद्र के मुख से सीता के अलग होने की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया ताकि सीता के लिए हंस को निर्धारण करने में कोई बाधा न आए । अंत में कवि ने हंस को रामचंद्र का सीता के प्रति संदेश को सुनाया । संदेश में सबसे पहले श्री रामचंद्र सीता के वियोग में अनेक कठिनाइयों का और विभिन्न मौसमों में अलगाव की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया गया है । इसके बाद समुद्र के ऊपर एक पुल का निर्माण, लंका मे आगमन, लंका का विनाश और रावण के विनाश के बाद सीता को वापस लाने का उल्लेख किया गया है । इस प्रकार रास्ता दिखाकर और संदेश सुनाकर हंस से लंका जाने की प्रार्थना की गई । जब संदेश पूरा हो गया, तो उसे उसके राजहंसनी के साथ चलने के लिए उसको शुभकामनाएं दी गई ।

इस प्रकार, एक हंस के माध्यम से संदेश देने और एक पुल के माध्यम से समुद्र पार करने के बाद, श्री रामचंद्र लंका में प्रवेश करते हैं । वहां वे रावण को मारते हैं और सीता को स्वीकार कर खुशी-खुशी अयोध्या में लौट आते हैं और इस तरह भरत द्वारा संरक्षित राज्य को पुनः परिपालन करते हैं । यहाँ पर पहुंचने पर काव्य की निर्विघ्न समाप्ति होती है ।

चूंकि कथा प्रसङ्ग सभी रामायण से हैं, इसलिए हम मानवीय मूल्यों के निर्धारण में भी रामायण को स्वीकार करते हैं । हंस संदेश में राम, सीता और हंस के मूल्यों का अवलोकन होगा जो बहुत उपयोगी होगा हमारे युवा छात्रों के लिए ।

मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने में रामायण की भूमिका

रामायण में भ्रातृप्रेम का एक उत्कृष्ट उदाहरण मिलता है जहां लक्ष्मण अपने माता और पिता को छोड़कर अपने बड़े भाई के प्यार में जंगल में चले गए, जबकि भरत राज्य प्राप्त करने के बावजूद वनवासी की तरह रहते थे।

कौशल्या एक आदर्श मां हैं। वो जितना राम को स्नेह करति हैं उतना ही लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न को स्नेह तथा विश्वास करती हैं। रामायण में कई अनमोल खजाने हैं। फिर भी यह कहा जा सकता है कि संपूर्ण रामायण ही मूल्यों से परिपूर्ण है। श्रीराम एक आदर्श पुत्र थे, पिता की आज्ञा उनके लिए सर्वोपरि थी। राम ने हमेशा एकपत्नीव्रत का पालन किया। जिसने उन्हें समाज में एक आदर्श बना दिया है। राजा के रूप में श्री राम ने प्रजा के कल्याण के लिए अपने धन ऐश्वर्य का त्याग किया। उनका व्यक्तित्व उल्लेखनीय है। वह बहुत बहादुर, मेधावी, विद्वान, धैर्यवान, संयमी, बुद्धिमान, सुन्दर और पराक्रमी थे। इस तरह वे लोगों की सेवा करने और दुष्टों को मर्दन(संहार) करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। वे युद्ध में कुशल, नीतिशास्त्र में कुशल, धर्मी, प्रतिष्ठित, लोगों के प्रति दयालु, शरणार्थियों के रक्षक और सभी शास्त्रों में निपुण थे।

इस संसार में सीता की पवित्रता का बोलबाला है। उन्होंने अपना सारा वैभव और धन छोड़कर अपने पति के साथ वन में चली गई। हनुमान एक आदर्श भक्त हैं। वे हमेशा एक परिचारक की तरह राम की सेवा के लिए समर्पित थे।

यह भी सार्वजनिक शिक्षा के लिए एक स्पष्ट उदाहरण है। इसका परिणाम समाज में विस्थापितों के बीच सेवा के मूल्य का विकास है। आज के समाज में मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है और हर इंसान जानवर की तरह व्यवहार कर रहा है। आप नहीं जानते कि किसके साथ कैसा व्यवहार करना है। इस समाज में हर जगह प्रदूषण हो रहा है। इस समाज में दिखने वाला यह असभ्य वर्ग भी समाज है। यहाँ कारण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है क्योंकि शिक्षा के बिना इस तरह से किसी भी राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षा ही राष्ट्र और समाज के निर्माण का आधार है।

मूल्यों का विकास समाज में होता है अन्यत्र नहीं। सामाजिक संपर्क से मनुष्य में नैतिक विकास होता है और समाज स्वयं मूल्यहीन होता है, तो मनुष्य में मूल्य कैसे हो सकता है? भारतीय शास्त्रों में मानव में मूल्यों के विकास का विस्तृत उपागम है। जैसे गीता, रामायण और मनुस्मृति शास्त्रों में है। यहाँ प्रश्न उठता है कि मूल्य क्या है, तो यह कहा जा सकता है कि मानव शरीर या आत्माओं में कुछ अलग शक्ति है और सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, सद्भावना, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, एकरसता, शुद्धता, विनम्रता, दया, शालीनता, न्याय, साहस, वीरता, मानव सेवा जैसे मूल्य हैं। आपसी सहयोग, सौहार्दपूर्ण व्यवहार और भाईचारा विकास में रामायण की भूमिका महान है या यूं कहें कि संपूर्ण रामायण अमूल्य है।

रामायण के नायक श्रीराम गरिमामय जीवन जीते थे। उन्होंने दुनिया को मार्ग दिखाया कि किसके साथ रहना चाहिए और किसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। वर्तमान समाज के लिए श्रीराम के व्यवहार की बहुत आवश्यकता है। यह भी कहा जा सकता है कि राम स्वयं मूल्यवान हैं। रामायण का खलनायक रावण था, जो एक अमूल्य व्यक्ति था। पर समाज में उनका कोई सम्मान नहीं था। इसका कारण था उनका अहंकार, अनुचित व्यवहार/ चारित्रिक दोष। आचार्य मम्मट काव्याप्रकाश में कहते हैं –

रामादिवद् व र्तितव्यं न तु रावणादिवत् (का.प्र. 1 / 2)

अर्थात् सभी के साथ राम जैसों की तरह व्यवहार किया जाना चाहिए न कि रावण जैसों की तरह। मानवीय मूल्यों के विकास में रामायण की भूमिका विभिन्न सन्दर्भों में दृष्टिगोचर होती है। जैसे की, आज के समाज में अपने शिक्षकों के प्रति, साधु संतों के प्रति, ईश्वर भक्ति के प्रति, महिलाओं के प्रति अशिष्ट व्यवहार किया जाता है। यह व्यवहार सामाजिक रूप से उचित नहीं है। भारतीय संस्कृति में इन के कार्य को एक महापाप के रूप में माना जाता है। वैसे ही गुरुशिष्य के मध्य वैसा सम्बन्ध देखने को नहीं मिल रहा है जैसा रामायण मे कहा गया है। आजकल गुरु अपने शिष्यों के प्रति इतना आदर नहीं दिखाते हैं और न ही शिष्य गुरु को उतना सम्मान देते हैं। इसका उल्लेख पद्मपुराण के पाताल खंड के चौबीसवें अध्याय में मिलता है -

यस्मिन् धर्मविधिः साक्षात् पतिव्रत्यं च यत् स्थितम्।
भातृस्नेहो महान् यत्र गुरुभक्तिस्तथैव च॥

अर्थात् - रामायण के नायक श्री राम स्वयं धर्म के प्रतिक थे। रामायण और अन्य ग्रंथों में श्री राम मनुष्य को धर्म की शिक्षा देकर समाज के लिए सही मार्ग दिखाते हैं। उनके जीवन में भ्रातृप्रेम और गुरु भक्ति थी जिसके कारण राम में रामत्व समाता है। इसके बारे में तुलसीदास रामचरितमानस में लिखते हैं। -

प्रातकाल उठे रघुनाथा मातपिता गुरु नावहिं माथा॥

अपने पूरे जीवन में उन्होंने अपने माता, पिता और शिक्षकों के प्रति भक्तिभाव को दर्शाया है। अगर आज के समाज में ऐसी बातें की जाएं और हर इंसान अपने बच्चों को पढ़ाए तो ये संस्कार बच्चों में अपने आप ही विकसित होने लगेंगे। तब बालक समाज में भाई, पुत्र, शिष्य आदि के रूप में राम के समान होगा। इसलिए रामायण की भूमिका वर्तमान में और भी अधिक दिखाई देती है।

1. कर्तव्यपरायण मानवीय मूल्यों के विकास में रामायण की भूमिका - रामायण के नायक श्री राम ऐसे राजा थे जिनके राज्य में एक भी मनुष्य या अन्य प्राणी कष्ट नहीं उठा रहा था और हर प्राणी सुख से रहता था। उनके राज्य में वसिष्ठ जैसे ब्रह्मऋषि थे जो हिताहित ज्ञान से परिचय करवाते थे और मार्गदर्शन करवाते थे। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न जैसे भाई और बहादुर राजा थे। इस राज्य में गायें थीं जो पर्याप्त दूध देती थीं। भार ढोने वाले बैल थे। और तेज दौडने वाले घोडे थे। इस प्रकार राष्ट्र के महारथी विजेता बने रहते थे। और दूसरी बात यह थी कि उस राष्ट्र के शिक्षक सभ्य युवक उत्पन्न कर रहे थे। इस राज्य में राष्ट्र के कल्याण की पूरी व्यवस्था थी। श्री राम अपने गुरु के अनुसार गायों के कल्याण के लिए और देश की रक्षा के लिए ब्राह्मणों की रक्षा के लिए हमेशा महान कार्यो के लिए समर्पित रहते थे। और कहा गया है

गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च हिताय वै।
तव चैवा प्रमेयस्य वचनं कर्तुमुद्यतः॥

आचार्यों का कहना है कि श्री राम कर्तव्यपरायण व्यक्ति थे। यह कर्तव्यपरायणता ही इस राज्य में किसी भी भौतिकबाधा से प्रभावित नहीं कर पाता था। तुलसीदास भी अपने रामचरित मानस में लिखते हैं -

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य नहिं काहुहि व्यापा॥

अर्थात् उनकी कर्मनिष्ठता के प्रभाव से किसी की अकाल ही मृत्यु नहीं हुई। सभी प्राणि रोग मुक्त थे। कोई भी दुखी या गरीब नहीं था। इसी तरह, यदि हम राम की तरह व्यवहार करते हैं, तो समाज और राष्ट्र की एक बार फिर राम के राज्य के रूप में कल्पना की जा सकती है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य में कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव होना चाहिए।

2 सत्यनिष्ठता के रूप में मानवीय मूल्यों का विकास - रामायण में श्री राम ने दण्डक वन में रहने वाले ऋषियों की रक्षा और सुरक्षा करने के लिए राक्षसों का संहार करने का वचन दिया था । इस प्रसंग में, श्रीराम सीता से कहते हैं, हे सीता, मैं अपना जीवन छोड़ सकता हूँ । इस प्रकार मे आपको तथा लक्ष्मण को नहीं छोड़ सकता और मैं ब्राह्मणों से किए गए इस विशेष वचन को भी तोड नहीं सकता । जगजननी माता सीता श्री राम से कहती हैं: आप धर्मी हैं, अपने वचन के प्रति सच्चे हैं, अपने पिता के आज्ञाकारी हैं और अपनी प्रतिज्ञाओं में दृढ़ हैं । इसलिए हर इंसान में ऐसे मूल्यों को विकसित करने में रामायण की भूमिका सर्वोपरि हो सकती है । क्योंकि अब इस समाज में कोई सच्चाई नहीं है । मनुष्य हर हाल में सत्य को त्याग कर असत्य की ओर भागता है । इस मूल्य के विकास में रामायण की भूमिका रही है।

3 उत्कृष्ट चरित्र का निर्माण - वाल्मीकि रामायण में राम के चरित्र की प्रचुरता और उनके पापों का नाश करने की क्षमता विश्व में प्रसिद्ध है । इसलिए रामायण में कहा गया है -

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥

अर्थात् राम शब्द के प्रत्येक अक्षर में बड़े-बड़े पापों का नाश करने की अतुलनीय शक्ति है । जैसे लोगों के बीच श्रीराम का नाम लोकप्रिय है, वैसे विष्णु, कृष्ण, माधव आदि का नाम लोकप्रिय नहीं है । पद्म पुराण में शिव और पार्वती बताते हैं कि राम ही मेरा धन है। एक बार राम नाम का जप करने से विष्णु के हजार नामों के समान हो जाता है शिव कहते हैं, हे मनोरमा, मैं आपमें भी राम को ही देखता हूँ । मैं अतिराम हूं, अर्थात्, मैंने परशुराम को पार कर लिया है और श्रीराम में मैं तल्लीन हो गया हुँ । जैसे विष्णुसहस्रनाम में कहा गया है -

राम रामेऽति रामेऽति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनामततुल्यं रामनाम वरानने ।।

श्री राम के समान कोई दूसरा महापुरुष नहीं था । उन्होंने हमेशा किसके साथ कैसा व्यवहार करना है यह अपने जीवन के माध्यम से प्रदर्शित किया है । उनके सभी गुण अनुकरणीय हैं । वर्तमान में भी मनुष्य के बीच चरित्र निर्माण में सहायक है । इसलिए, रामायण की एक भूमिका है।

4. नीति निर्धारण में रामायण की भूमिका शुक्र नीति के अनुसार - राम जैसा कोई नीतिवान व्यक्ति नहीं था, और उनकी नैतिकता के कारण, यहां तक कि बंदरों और अन्य जानवरों ने भी उनका स्वामीत्व स्वीकार किया । ऐसे न्याय और निष्पक्षता के प्रभाव में पशु भी राम के मित्र बन गए ।

राजा ब्रह्मचर्य और तपस्या से राष्ट्र की रक्षा करता है । यदि किसी राज्य का राजा विलासी है, तो उस राज्य के विकास की कल्पना करना असंभव है । जैसे की कहा जाता है -

नहि तद् भविता राष्ट्रं यत्र रामो न भूपतिः ।
तद्वनं भविता राष्ट्रं यत्र रामो निवत्स्यति ।।

अर्थात् - जहाँ राम राजा नहीं हैं, वह देश राष्ट्र नहीं है, जहाँ राम निवास करते हैं, वहां वन भी राष्ट्र है । राम नीति निर्माण के विशेषज्ञ थे । राम ने अपनी पत्नी को भी दुनिया के पूर्वाग्रह के तहत त्याग दिया था । जैसे की कहा गया है -

अस्माकमपि दारेषु सहनीयं भविष्यति ।
यथा हि कुरुते राजा प्रजा तदनुवर्तते । (वा.रा.1/43/19)

राजा हो तो राम के समान हो । वर्तमान में शासकों में नीति निर्धारणपरक नैतिक मूल्यों का अभाव है । यदि शासकों में ये मूल्य विद्यमान हों तो राम राज्य की कल्पना आज भी की जा सकती है । इसलिए रामायण हर राज्यों में मूल्यों के विकास में अहम भूमिका निभाता है ।

5. रामायण में आदर्श मातृत्व शक्ति - श्री राम की माता एक आदर्श माता हैं । कैकेयी द्वारा राम के साथ किए गए अन्याय को भूलकर वह अपने पुत्र भरत को उतना ही स्नेह करति हैं जितना की राम को करती हैं ।

6. रामायण में एकपत्नीव्रत श्रीराम द्वारा किये गये प्रतिज्ञा अनुसार सीता को छोड़कर दुनिया में सभी महिलाएं मेरी मां कौशल्या के समान हैं । मैं अपने मन, वचन और कर्म में किसी अन्य स्त्री के बारे में नहीं सोच सकता हुँ । इसका एक उदाहरण आनंद रामायण में भी मिलता है -

अन्यत्सीतां विनान्या स्त्री कौशल्यासदृशीमयं ।
न क्रियतेऽपरा पत्नी मनसापि न चिन्तये ॥

यहाँ तक कि सीता के परित्याग में और यज्ञों के कार्य में भी राम कई ऋषियों और प्रजाओं के आग्रह के बावजूद सीता के अलावा किसी अन्य महिला के बारे में नहीं सोचते हैं । अतः राम ने यज्ञ में सीता के स्थान पर सीता की स्वर्ण प्रतिमा का प्रयोग किया था -

न सीतायाः परी भार्या वृणे सा रघुनन्दनः ।
यज्ञ यज्ञे चपत्त्यर्थं जानकी काञ्चनी भवत् ॥

7. रामायण में देशभक्ति - राष्ट्र के प्रति भक्ति भी मूल्य है क्योंकि राष्ट्र सभी जीवन का आधार है । राष्ट्र के बिना मनुष्य का अस्तित्व नहीं हो सकता । वर्तमान में सभी भौतिकवादी धन के लिए अपना देश छोड़कर विदेश जा रहे हैं । रामायण राष्ट्रप्रेम मूल्य के विकास में एक अहम भूमिका निभाता है जब राम ने लंका पर विजय प्राप्त की, तो लक्ष्मण ने उन्हें वहाँ शासन करने के लिए कहा । फिर राम ने कहा -

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मणः रोचते ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसि ॥

यह प्रेरणा राष्ट्र के प्रति सद्भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

मानवीय मूल्यों को बढाने में हंस संदेश काव्य की भूमिका

कवि की प्रकृति का चित्रण और समुद्र का वर्णन -

दावासक्तं वनमिव नभस्सन्ध्ययेवानुविद्धं
सिन्दूराभङ्कं द्विपमिव हरिं स्वाम्बरेण जुष्टम् ।
विद्युद्भिन्नं घनमिव सखे विद्रुमारण्ययोगा
देहेनैकं मिथुनमिव च द्रक्ष्यसि त्वं पयोधिम् ।। 1।।55।।

अर्थात् - हे मित्र, प्रवाल वन के सम्बन्ध से समुद्र को दावाग्नि से युक्त वन की भाँति, सन्ध्याकाल से युक्त आकाश की भाँति, सिन्दूर से अङ्कित हाथी की भाँति, अपने पीताम्बर से संयुक्त भगवान् विष्णु की भाँति, बिजली से संयुक्त मेघ की भाँति और शरीर से एक जोडे अर्धनारी नटेश्वर या लक्ष्मी-नारायण की भाँति देखोगे । विद्यार्थियों की रचनात्मकता का विकास होगा । असहनीय अलगाव के दर्द में अपने जीवन की गति का वर्णन करते हुए, श्री रामचंद्र सीता से कहते हैं:

देहस्पर्शं मलयपवने दृष्टिसम्भेदमिन्दौ
धार्मकत्वं जगति भुवि चाभिन्नपर्यङ्कयोगम् ।
ताराचित्रे वियति वितति श्रीवितानस्य पश्यन्
दूरीभूतां सुतनु विधिना त्वामहं निर्विशामि ॥ 2।।40।।

अर्थात् - हे सुन्दरि मलयपवन में तुम्हारे शरीर के स्पर्श को, चन्द्रमा में तुम्हारे मुखदर्शन के समागम को, जगत में तुम्हारे निवासस्थान की एकता को और पृथ्वी पर ही तुम्हारे साथ एक पलङ्ग के संयोग को तथा ताराओं से चित्रित आकाश में श्रीयुक्त वितान तुम्हारे साथ क्रीडा योग्य शैय्या के ऊपर लगे चन्दोवे के विस्तार को देखते हुए

हम दैववश दूर स्थित हुई तुम्हारा अनुभव कर रहे हैं । छात्र परानुभुति को जान पाएंगे ।

पति के प्रति समर्पण, अच्छे आचरण, कोमलता आदि के लिए रामचंद्र की स्तुति –

तातोदेशात्सपदि भरते न्यस्तराज्याभिषेकं
या मामेका बनमनुगता राजधानी विहाय ।
तामेव त्वामुचितशयनां बाहुमध्ये मदीये
दूरे कृत्वा गुणवति मुहूयते जीवितं मे ।।2।।42।।

अर्थात् - मेरे पिता के आदेश से, भरत को राज्याभिषेक सौंपा जाने पर, जो अकेले ही राजधानी छोडकर जंगल में मेरे पीछे हो लिए । हे! गुणवति, मेरी भुजाओं के मध्य में जिसका उचित शयन है, उसी तुम सीता को दूर करके मेरे प्राण अत्यधिक दुःखी हो रहे हैं ।

कर्तव्य का परित्याग नहीं करना चाहिए, अपने गुणों, चरित्र और परंपराओं की रक्षा करनी चाहिए ।

राजहंस के बारे में हंस संदेश मे कहा गया है -
कृत्वा तस्मिन्वहुमतिमसौ भूयसीमाञ्जनेयात्
गाढोन्माद प्रणयपदवीं प्राप वार्ताऽनभज्ञे । 1 ॥ 5॥

अर्थात् - राम ने, जो अत्यन्त विक्षिप्त है, उन्होंने हनुमान की अपेक्षा सन्देश से अनभिज्ञ उस हंस को कहीं अधिक सम्मान दिया है ।

श्री रामचंद्र ने हमें सभी जीवों के लिए करुणा रखने का मूल्य दिखाया है ।

सीता माता को पतिव्रता नारी के रुप में श्रीराम ने राजहंस से कहा -

द्रक्ष्यस्येवं प्रियसखे सुखं लङ्घिताध्वा सखीं तां
सीतां क्षेत्रे जनकनृपतेरुत्थितां सीरकृष्टे ।
गोपायन्ती तनुमपि निजां या कथञ्चिन्मदर्थं
भूमौ लोके वहति महतीमेकपत्नीसमाख्याम् ।।1।।14।।

अर्थात् – हे प्रिय मित्र इस प्रकार सुखपुर्वक मार्ग पार कर तुम जनक महाराज के हल से जोते हुये खेत में आविर्भूत उस सखी को देखोगे, जो मेरे लिये किसी-किसी प्रकार अपने शरीर की भी रक्षा करती हुई भूलोक में पूज्य एकपत्नी नाम को धारण कर रही हैं ।

चाहे कैसी भी परिस्थीति आ जाए हमें एक दुसरे का साथ नही छोडना चाहिए ।

सम्पूर्ण ग्रन्थ से चयनित मूल्यों के अमृतधारा का आस्वादन करें ।

सीता में अनुरक्ति/ श्रीराम का एक पत्नी व्रत धर्म पर आधारित श्लोक

वंशे जातस्सवितुरनघे मानयन्मानुषत्वं
देवः श्रीमाञ्जनकतनयान्वेषणे जागरुकः ।
प्रत्यायाते पवनतनये निश्चितार्थस्सकामी
कल्पकारां कथमपि निशामाविभातं विषेहे ।।1।।

श्रीराम द्वारा हंस के लिए बहुसम्मान

कृत्वा तस्मिन्बहुमतिमसौभूयसीमाञ्जनेया-
द्गाढोन्मादः प्रणयपदवीं प्राप वार्तानभिज्ञे ।
विश्लेषेण क्षुभितमनसां मेघशैलद्रुमादौ
याच्ञादैन्यं भवति किमुत क्वापि संवेदनार्हे ।।5।।

रक्षणस्वभाव पर श्लोक

लब्दाश्वासः कथमपि तदा लक्ष्मणस्याग्रजन्मा
सन्देशेन प्रणयमहता मैथिलीं जीवयिष्यन् ।
चके तस्मै सरसिजदलैस्सोपचारां सपर्यां
कान्ताश्लेषादधिकसुभगः कामिनां दूतलाभः ।।4।।

सेवाभाव सम्बद्ध श्लोक

आरक्तानां नवमधु शनैरापिबन् पद्मिनीनां
कालोन्निद्रे कुवलयवने घूर्णमानस्सलीलम् ।
स्विन्नो दानैर्विपिनकरिणां सौम्य !सेविष्यते त्वा –
मामोदानामहमहमिकामादिशन् गन्धवाहः ।।11।।

भगवान के समरुपता-कल्याणकारी-गुण का ज्ञान

तत्रारुढैर्महति मनुजैस्स्वर्गिभिश्चावतीर्णैः
सत्त्वोन्मेषाद् व्यपगतमिथस्तारतम्यादिभेदैः ।
साधारण्यात्फलपरिणतेस्सङ्घशो बध्यमानां
शक्त्या कामं मधुविजयिनस्त्वं च कुर्यास्सपर्याम् ।।22।।

भ्रातृप्रेम समब्द्ध श्लोक

पार्श्वे लोलैः परभृतकुलैर्मुक्तकोलाहलानां
मल्लीरेणुस्थगितवपुषां मन्दरं निर्गतानाम् ।
भीतेनाहं भ्रमरपटलीश्रृङ्खलासङ्कुलानां
मार्गे तिष्ठन्मलयमरुतां वारितो लक्ष्मणेन् ।।36।।

आत्मरक्षा / स्व शरीर कि रक्षा सम्बद्ध श्लोक

शच्याः क्लेशं क्वचनसमये तादृशं चिन्तयित्वा
स्मृत्वा देवीमचलतनयां विप्रयुक्तां शिवेन ।
रक्षात्मानं कथमपि शुभे जीवितालम्बनं मे
पत्युश्छन्दाद्व्यसनमपि हि श्लाघनीयं वधूनाम् ।।46।।

मातृभूमि के प्रति भक्ति सम्बन्धित श्लोक

सन्दिश्यैवं सह कपिकुलैस्सेतुना लङ्घिताब्धिः
पङ्क्तिग्रीवे युधि विनिहते प्राप्य सीतां प्रतीतः ।
राज्यं भूयस्स्वयमनुभवन् रक्षितं पादुकाभ्यां
रामः श्रीमानतनुत निजां राजधानीं सनाथाम् ।।49।।

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है - नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति दार्शनिक रूप से संबंधित है । तथा ये दोनों एक दुसरे के परिपूरक हैं। हंस सन्देश मे प्रदर्शित ये मूल्य (एकपत्नीव्रतधर्म, जीवजन्तुप्रेम, रक्षणभाव, सेवाभाव, भगवान का सर्वव्यापी कल्याणकारी गुण, भ्रातृप्रेम, आत्मरक्षा तथा मातृभूमि के प्रति प्रेम) मानवों को जीवन कैसे जीना है का मूल मंत्र बताती है और एक सुखपूर्ण जीवन पथ प्रदर्शित करती है । छात्र इन मूल्यों के अनुपालन से राष्ट्र को और नई उँचाईयों पर ले जा सकेंगे ।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. वाल्मीकि रामायण
2. आनन्दरामायण
3. रामचरितमानस
4. पद्मपुराण
5. हंससन्देश
6. राष्ट्रियशिक्षानीति 2020 हिन्दी (पीडीएफ)